भजन

तर्ज..आधा है चन्द्रमा

हमने तुम्हारी न बात मानी,कर दो पिया अब मेहरबानी जिद क्यूं ठानी
एक नही हार बार– बार मानी,कर दो पिया अब मेहरबानी हाय मेहरबानी

1) नही जाना था खेल होगा ऐसा, पिया सोचा था होगा घर जैसा
कोई ऐसा है दुःख जहा आपका है सुख,पिया करते रहे आप आना–कानी

2) आके खेल मे भूली यहां ऐसे, सम्बन्ध रहा ना कोई जैसे
आके भूली यहां देखकर सपना, पिया आपको भी हुई बड़ी परेशानी

3) बेनियाज़ी अर्श में थी पूरी, साहेबी की अक्ल थी अधूरी
थी अधूरी वहाँ हुई पूरी यहां, पिया जानी मैं आपकी कद्रदानी

4) पिया हल्के हल्के ना जगाओ, उपर से तुम शोर ना मचाओ
आप चाहेंगें जब खेल खत्म होगा तब, पिया अंगना की ना चलें मनमानी